# अदीठ लिबास

धरती बीज नहीं चुराती, पर सूखी मिट्टी में बीज नहीं उगता। कुएँ-तालाब में जहर घुल सकता है, पर बादलों के पानी में मिलावट नहीं हो सकती। पके घड़े की बजाय, कोरे घड़े में पानी जल्दी ठण्डा होता है। कलियाँ खिलती हैं पर फूल झड़ते हैं। मुरझाये फूलों से बगीचे की रौनक नहीं बढ़ती। तो समय का देवता किसी आदमी के बासी हृदय में फफूँद न लगने दे तो बड़ी बात कि गुजरे वक्त के दरबार में एक था राजा। भला, राजा पर किसका राज! राजा का आदेश घर-घर चलता है, पर राजा किसका कहा माने! उस राजा को नये-नये कपड़ों का ऐसा ज़बरदस्त शौक कि उसका सारा दिन कपड़े बदलने में निकल जाता। राज-काज की उसे रत्ती-भर भी चिन्ता नहीं थी और न ही उसे इससे कोई सरोकार था कि रैयत ज़िन्दा है कि मर गयी। कपड़ों के नित नये सौदागर। नित नये दरजी। नित नये लिबास। दूर-दूर से बेशकीमती कपड़े आते। खालिस सोने-चांदी की कसीदाकारी। हीरे-मोतियों के बटन। राजा का खजाना तेजी से छीजने लगा। पर राजा को क्या परवाह!

आखिर रिआया का दुख देखकर रानी का दिल भर आया। साहस बटोर कर राजा से अरज की, पर चिकने घड़े पर भला कहीं पानी ठहरा है! उलटे उसी को कपड़ों का महातम समझाने लगा, 'पंछी, जानवर और आदमी में यही तो फर्क है। फकत कपड़ों से ही आदमी, आदमी कहलाता है। जंगल का राजा शेर तक नंगा घूमता है। न शर्म, न हया। पंछी नंगे उड़ते हैं। मछलियां नंगी तैरती हैं। ढोर-डाँगर नंगे डोलते हैं। घोड़ों और गधों को नंगा देखकर मैं तो शरम से गड़ जाता हूँ। तुम्हारे कहने से अभी-अभी मेरे दिमाग में एक नयी बात आयी है। पूरी रियासत में मुनादी करवा देता हूँ कि आज के बाद जिस किसी का पालतू जानवर नंगा

पाया जायेगा, उसे सख्त सजा दी जायेगी।'

देश के मालिक पर किसका जोर! आयी थी समझाने, लेकिन उलटे उस पर नयी खब्त सवार हो गयी। रानी ने शंका की, 'और जो पालतू नहीं हैं?'

वो अपने ही जाल में फँस गया। जिद करते बोला, 'रियासत के कामचोर दरबारी और कारिन्दे फिर किस दिन के लिए हैं! पहले लाज, फिर राज! अभी फरमान जारी करता हूँ।'

पगले गाँव मत जलाना कि खूब याद दिलाया। शायद अति, उसकी जिद के ज्वार को रोक सके! यह सोचकर उसे चिढ़ाते बोली, 'फिर कीड़े-मकोड़ों, मक्खियों, भँवरों, मकड़ियों वगैरा को क्यूँ पीछे रखते हो। उन्होंने क्या कसूर किया? है किसी रियासत के खजाने की इतनी हैसियत कि चौमासे के टीड-फाके को कपड़े पहना सके!'

वो सोच में पड़ गया। जरा ठहर कर बोला, 'इन छोटे जीवों की बात अलग है। और वैसे, आदमी भी नंगा पैदा होता है। कोई पेट में तो कपड़े पहना नहीं सकता।'

'क्यूँ नहीं पहना सकता! फकत मुनादी फिराने की देर है।'

ताना उसके सर के ऊपर से गुजर गया। जो समझाने से समझ जाये, वो राजा कैसा! राजहठ एकदम अन्धा और बहरा होता है। दाँतों से नाखून कुतरते बोला, 'इसके लिए खजांची से जरा सलाह-मशविरा करना पड़ेगा।' फिर ताली बजाकर, थोड़ी ऊँची आवाज में बोला, 'कोई है?'

अदेर एक पहरेदार हाजिर हुआ। उसे आदेश हुआ कि फौरन दीवान को यहाँ भेजे।

रानी का वहाँ दम घुटने लगा। कुछ कहे-सुने बगैर वह सीधे अपने महल में गयी और निढाल-सी पलँग पर गिर पड़ी। शायद अकेले में सोचने से कोई तरकीब सूझे। कुछ न किया गया तो यह राज बस खतम हुआ समझो।

और उधर राजा ने तो कुछ करने का बीड़ा

उठा ही लिया था। दूसरे दिन समूची रियासत में ऐलान कर दिया गया। यह नया आदेश सुनकर रिआया के कानों के कीड़े झड़ गये। गाँव-गाँव में तहलका मच गया। अपना बदन ढाँपने का इन्तजाम जुटाना ही मुश्किल है, ढोर-डाँगरों के लिए कपड़े कहाँ से लायें? गूँगी परजा और बहरा राजा। फरियाद की गुंजाइश ही कहाँ थी!

इस हाय-तौबा के दरम्यान एक दिन दरबार में इक्कीस कारीगरों ने हाजिर होकर पेशकश की कि उनके मुकाबले के कारीगर इन्द्रलोक में भी नहीं मिल सकते। फकत राजा-महाराजाओं की खिदमत करते हैं। खुद रेशम पैदा करते हैं। खुद सूत कातते हैं। खुद कपड़ा बुनते हैं। खुद सीते और खुद ही कसीदा काढ़ते हैं। पर पैसों का जोर होना चाहिए। ऐसी-वैसी रियासत तो उनका खर्च ही नहीं ढो सकती।

पर वो कोई ऐसी-वैसी रियासत नहीं थी। बहुत देखे ऐसे ऊँचे कारीगर! राजा फौरन उनकी बात मान गया। तब उन्होंने एक बात और बतायी कि कारीगरी के साथ-साथ उनका कपड़ा भी इतना झीना और नफीस है कि हरामी और मूरखों को तो नजर ही नहीं आता।

राजा को नये कपड़ों का बेहद शौक था। खुशी से छलकते बोला, 'यह तो और भी अच्छा है। बात-की-बात में हरामी और मूरखों की पहचान हो जायेगी। फौरन काम शुरू कर दो।'

उनके लिए खजाने के मुँह खोल दिये गये। राजा के हुक्म के बाद किसकी मजाल कि कोई रोक-टोक करे! और तिस पर रानी की निगरानी। वह खुद कारीगरों की हर जरूरत का पूरा-पूरा खयाल रखती। राजा तक बात पहुँचने का मौका ही नहीं आता। रानी के साथ जुड़ने से राजा का बचा-खुचा खटका भी जाता रहा।

कारीगरों ने छह महीनों की मोहलत माँगी थी। उन बेजोड़ कपड़ों के बनने तक, राजा

का रोज नये-नये कपड़े पहनने का चाव खत्म हो गया। दूसरे कपड़े उसकी नजर में चढ़ते ही नहीं। उसके सब्र का बाँध भर गया। रेशम पैदा करने में लाखों रुपये फुँक गये। उसके बाद बारी आयी कातने और बुनने की। इक्कीस चरखे और इक्कीस ही करघे। खटपट-खटपट से सारा राजमहल तालमय हो उठा।

एक दिन आखिर राजा से न रहा गया तो उसने रानी को मुआइना करने के लिए भेजा। तीन घड़ी बाद रानी भागी-भागी आयी। खुशी के फूल बरसाते कहने लगी, ''क्या कपड़ा है और क्या कारीगरी? मेरी तो अक्ल ही काम नहीं करती। देवता भी ऐसे कपड़े के लिए तरसते होंगे। ऐसी बेजोड़ चीज बनी है कि आज तक किसी ने देखी-सुनी नहीं होगी। नजर ही नहीं टिकती। आप कहें तो दो जोड़ी मैं भी सिला लूँ।'

राजा की खुशी की सीमा न रही। रानी के कपड़ों से कहीं और देरी न हो जाये। उसे तसल्ली देते कहा, 'पहले मेरे कपड़े तो बनने दो। तुम्हारे लिए मनाही थोड़े ही है। दो की जगह दस बनवा लेना।'

रानी को जबरन सब्र करना पड़ा।

रानी के मुँह से तारीफ सुनकर कारीगरों का जोश बढ़ गया। रात-दिन काम चलने लगा। चरखों की भन्-भन् और करघों की खटपट से राजमहल की हवा दरकने लगी।

एक दिन राजा अचानक मुआइना करने आरमखाने जा पहुँचा। तमाम कारीगर अपने-अपने काम में मगन थे। कोई लच्छियाँ इकट्ठी कर रहा था। कोई टूटे धागे को चुटकी से जोड़ रहा था। कोई कपड़े के थान को तहाकर रख रहा था। पर राजा को न लच्छियाँ नजर आयीं, न धागा, न थान। तो क्या वो हरामी और मूरख है? रानी ने झूठी तारीफ थोड़े ही की होगी! न दिखने का कहने पर सारी कलई खुल जायेगी। हरामी और मूरख को राजा कौन मानेगा!

एक कारीगर उसके पास आकर, थान

खोलता-सा बोला, 'कपड़े तो खूब बनाये, पर ऐसा शानदार पोत कभी नहीं बना।' फिर आँखें सिकोड़ते कहने लगा, 'आँखें चौंधिया रही हैं!'

राजा ने आँखें फाड़-फाड़ कर देखा, पर उसे कहीं कुछ नजर नहीं आया। शायद कपड़ा बहुत महीन है। हरामी और मूरख के फतवे से बचने की खातिर ढोंग करना ही होगा। खुशी दर्शाते बोला, 'वाह, क्या बात है? तुमसे इतनी उम्मीद नहीं थी! अब जल्दी करो।'

कारीगर हाथों के झटके से वापस थान समेटने लगा। राजा ने जाते-जाते कहा, 'पैसों की कमी हो तो संकोच मत करना। खजाना फिर किस दिन के लिए है!'

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। काम के मारे साँस लेने की भी फुरसत नहीं थी।

राजा बाहर निकला ही था कि सामने से दीवान टकरा गया। खुशी सने सुर में बोला, 'अब क्या बताऊँ? जितनी तारीफ की जाय, उतनी कम है। आहा! क्या लाजवाब कपड़ा बना है। बड़ी मुश्किल से आँखों पर भरोसा हुआ। आप भी एक बार देख आयें। मर गये तो मन में रह जायेगी।'

दीवान नरमाई से बोला, 'अन्नदाता, बस, आपके आदेश की ही देर थी। अभी हो आता हूँ।'

थोड़ी देर बाद दीवान वापस आता दिखा तो राजा ने बेताबी से पूछा, 'क्यूँ दीवानजी, कैसा लगा? है न शानदार चीज!'

उसके पास तारीफ के अल्फाज नहीं थे। सर हिलाते कहने लगा, 'अब क्या अर्ज करूँ हुजूर! इसकी तारीफ के लिए दस जबान चाहिए। क्या पोत है और क्या उसकी आब! बरसों तक कपड़ा मैला न हो।'

हरामी और मूरख के खिताब से तो झूठ बोलना हजार गुना अच्छा है। राजा ने समझा, दीवान सच कह रहा है और दीवान ने सोचा, भला हुजूर झूठ थोड़े ही कहेंगे!

एक के बाद एक तमाम दरबारी कारीगरों

के पास गये और सबने बढ़-चढ़कर सराहना की।

एक दिन रानी नाप दिलवाने राजा को उनके पास ले गयी। मुखिया ने झटपट उसका नाप लिया और कैंची से कपड़ा काटने लगा। कच-कच की आवाज तो साफ सुनायी दे रही थी, पर राजा को हवा की तरह कपड़ा कहीं नजर नहीं आया। सहसा रानी मुखिया का हाथ पकड़कर बोली, 'अरे रे, यह क्या किया, दो थर साथ काट दिये!'

मुखिया ने मुस्कराते कहा, 'जान के ही काटे हैं, गलती से नहीं। पर सीऊँगा अलग-अलग।'

कपड़ा काटकर मुखिया बहुत एहतियात से सूई चलाने लगा, जैसे कपड़ा सी रहा हो। राजा की उलझन का पार न था। अगर रानी और दीवान को उसके दोगलेपन और बेवकूफी का पता चल गया तो कान पकड़कर गद्दी से उतार देंगे। राम जाने, क्या सोचकर उसने सूई की ओर इशारा करते पूछा, 'ये सलवटें बुरी नहीं लगेंगी?'

'ये सलवटें डालना ही तो सबसे मुश्किल है। सिलने पर मुलाहजा फरमाइयेगा। अभी तो हुजूर को दो-तीन दफा पहनाकर जाँच करूँगा।' कारीगर ने बगैर सर ऊँचा किये ही जवाब दिया।

राजा कुछ बोले, उससे पहले ही रानी ने अपने कपड़ों की याद दिलायी। राजा ने कहा, 'अब मेरी ना नहीं है। जितने चाहो सिलवा लो।'

मुखिया सर धुनते बोला, 'एक काम पूरा हुए बिना मैं दूसरा काम हाथ में नहीं लेता। चाहे वो खुदा ही क्यूँ न हो।'

वहाँ और रुकना राजा की बर्दाश्त के बाहर था। झुँझलाया हुआ दरबार की ओर चल दिया। दीवान पर नाराज होते बोला, 'काम बहुत ढीला चल रहा है। जाओ, देखकर आओ, कितना काम बाकी है। जरूरत पड़े तो कुछ कारीगर और बुलवा लो। जाओ, मेरा मुँह क्या देख रहे हो! जल्दी करो।'

दीवान घबराया हुआ आरमखाने की ओर चल दिया। तमाम कारीगर अपने-अपने काम में मशगूल थे। एक कारीगर उसके पास आकर कहने लगा, 'जरा यह सिरा पकड़ना। रानी साहिबा फरमाती हैं कि यह दस हाथ ही है।'

कपड़ा नजर नहीं आया तो भी दीवान ने चिमटी कसकर भींच ली। कारीगर थान खोलते हुए पीछे खिसकने लगा। फिर दाहिने हाथ से कपड़ा नापते हुए दीवान तक पहुँचा और उससे कपड़ा खींचकर रानी की ओर मुँह करके बोला, 'आपने ठीक फरमाया। पहले नापने में गलती हो गयी।'

पर दीवान को कपड़े की एक झलक तक नहीं दिखी। चौतरफ कैंचियाँ चल रही थीं। सुइयाँ दनादन ऊपर-नीचे हो रही थीं। वो अकेला ही दोगला और मूरख कैसे हुआ! हुजूर को पता लग गया तो खैर नहीं। धीमे सुर में रानी की ओर देखकर कहने लगा, 'यह लिबास हुजूर पर बहुत फबेगा!'

कारीगर तपाक-से बोला, 'बुरा तो आपको भी नहीं लगेगा। कहें तो दो जोड़ी आपके भी बना दूँ। हुजूर के कपड़े तो तैयार हैं।'

दीवान ने दबती आवाज में कहा, 'हुजूर से पूछना पड़ेगा। इतने महँगे कपड़ों के लिए मैं सोच भी नहीं सकता। सारा खजाना खाली हो गया।'

दरबार में पहुँचते ही राजा ने पूछा, 'अब क्या ढील है?''

'हुजूर के सारे कपड़े तैयार हैं। कल महूरत भी अच्छा है। रानी साहिबा ने फरमाया है कि कल पूरे शहर में हुजूर की सवारी निकलेगी। जितने भी दोगले और मूरख हैं, सबकी एक साथ पहचान हो जायेगी।'

राजा का वहम तब भी दूर नहीं हुआ। पूछा, 'आपने अपनी नजरों से सिले हुए कपड़े देखे हैं?'

'हाँ अन्नदाता! मैं अभी खुद देखकर आया हूँ।'

राजा को मजबूरन भरोसा करना पड़ा।

दूसरे दिन इत्र-फुलेल से नहाकर राजा हम्माम से निकला, तब उसके बेजोड़ लिबास पर फूँक देते कारीगरों का मुखिया अपने साथियों समेत बाहर तैयार खड़ा था। राजा के मौजूदा लिबास की ओर देखकर मुँह बिचकाते बोला, 'यह लिबास राजाओं के पहनने लायक है? इससे तो भालू का बदन भी छिल जाये। मैं तो इसे देख भी नहीं सकता। हुजूर, अब इसे जल्दी उतारें।'

राजा ने काँपते हाथों से अपने तमाम कपड़े उतार दिये। मुखिया ने बड़ी नफासत से नया लिबास पहनाया। तारीफ कर-करके सबके गले सूख गये। मुखिया की आवाज सुनकर रानी भीतर आयी। राजा ने मुस्कराकर उसकी तरफ देखा। वह भी जवाब में मुस्करायी। खुश होकर मुखिया की पीठ ठोंकी, 'वाह, कारीगरी हो तो ऐसी! क्या जानदार कसीदा है!' फिर राजा की ओर बढ़कर कहने लगी, 'अँगरखी के बन्द तो बाँधे ही नहीं।'

एक कारीगर अपनी भूल कबूल करते हुए अँगरखी के बन्द बाँधने लगा। पर राजा को न अँगरखी नजर आयी, न उसके बन्द। मुखिया ने दोनों हाथों में शीशे लेकर उसके सामने किये। राजा ने दोनों शीशों में काफी ऊपर नीचे देखा, पर उसे अपने नंगे बदन के अलावा कोई कपड़ा या कसीदाकारी नजर नहीं आयी। शायद वो अकेला ही हरामी और मूरख है। औरों को उसका बदन बेशकीमती लिबास में ढका हुआ ही दिखता होगा। तभी तो ये बढ़-चढ़कर तारीफ कर रहे हैं।

मुखिया ने चारों ओर शीशे घुमाते पूछा, "फरमाइये, है कोई इसका मुकाबला?"

राजा धीरे-से बोला, 'शाबाश, शाबाश! क्या कहना! सारा खजाना खाली हो गया, उसकी फिक्र नहीं, पर ऐसा बेजोड़ हुनर देखने का मौका तो मिला!' फिर रानी की ओर देखते कहा, 'अब जल्दी ही इनके लिए भी ऐसी ही शानदार पोशाक बना दो।'

'जो हुक्म सरकार।'

उसके बाद हाथी के हौदे पर राजा की सवारी निकली। रानी के आदेश से सारा इन्तज़ाम पहले ही हो चुका था। गली-गली में सवारी घूमी। हजारों की तादाद में मरद, औरतें, बच्चे, जवान और बूढ़े अनोखे कपड़े की अनोखी कसीदाकारी देखने के लिए उमड़ पड़े। 'खम्माघणी-खम्माघणी' और जै-जैकारों से आकाश गूँज उठा। बेमिसाल हुनर के बखान कर-करके लोगों की जबान पर छाले पड़ गये। तालू सूख गये। तब राजा को भी पुख्ता विश्वास हो गया कि इस कपड़े और इस कसीदे की बराबरी कोई नहीं कर सकता। खजाना खाली हो गया तो कोई बात नहीं। इससे बेहतर इस्तेमाल और क्या होता!

पूरे शहर का चक्कर लगाकर राजा की सवारी वापस लौट रही थी। रानी का आदेश पाकर सब खामोश हो गये। एकदम सन्नाटा छा गया, मानो सबकी जबान तालू से चिपक गयी हो। हाथी पर राजा की सवारी निकल रही थी। ललाट में चढ़ीं अनगिनत आँखें लाजवाब लिबास को देख रही थी कि अचानक किलकारी भरता एक अबूझ बच्चा जोर से चिल्लाया, 'राजा नंगा, राजा नंगा!'

वह आवाज सुनते ही जैसे सभी की एक साथ मूरछा टूटी हो। चारों ओर शोर मच गया, 'राजा नंगा...राजा नंगा...'

एक बच्चे के भोलेपन से सबकी आँखों का जाला कट गया। दीवान के हामी भरने पर राजा को होश हुआ कि बेजोड़ और अनोखे लिबास के भ्रम में वे नंग-तड़ंग पूरे शहर में घूम गया! इस पागलपन का कोई पिरासचित भी है?

जिस राज को रानी ने इतने जतन से दबाये रखा, उसे प्रगट न करना ही लेखक का धरम है। इसलिए इस किस्से को यही खत्म करता हूँ।

● विजयदान देथा